।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः।।

तत्व बोध

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था
नई दिल्ली
अंक – 11

श्री साई शक 43
12 अप्रैल 2025

श्री हनुमान जयंती

प्रत्येक भक्त का देहिक और आत्मिक विकास हो इसलिए गुरु आज्ञा से श्री मारूति स्तोत्र का समावेश नित्य साधना में किया गया। इस स्तोत्र का महत्व क्या है यह समझ लेना आवश्यक है।

मारूति स्तोत्र परम पूज्य श्री रामदास स्वामी जी ने लिखा है। वे महाराष्ट्र के एक महान संत थे। उनका निवास स्थान सातारा के नजदीक सज्जनगढ़ पहाड़ पर था। उनके उपास्य दैवत श्री राम प्रभु थे। श्री रामदास स्वामी जी ने आध्यात्म के विषय पर जो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखें है उनमें दासबोध, मनाचे श्लोक आदि का समावेश है। 'भीमरूपी' यह स्तोत्र उन्होंने श्री राम जी की आज्ञा से लिखा है। भीमरूपी स्तोत्र की उस समय और आज भी आवश्यकता है यह समझकर मेरे पिता जी ने मेरी आठ साल की उम्र में मुझे इस स्तोत्र का नित्य नियम से पाठ करने के लिए कहा था। उसके अनुसार मैं नित्य नियम से श्री मारूति स्तोत्र का पाठ करता आया हूँ और आज भी कर रहा हूँ। शक्तिपीठ स्थापना को तीन साल पूर्ण होने के बाद प.पू. साई बाबा की आज्ञा हुई कि भीमरूपी यह केवल स्तोत्र नहीं है बल्कि उसमें जीवन का शास्त्र, शस्त्र और अस्त्र है। तुम 'दीक्षा' के रूप में इस स्तोत्र का पाठ करने के लिए सब भक्तों से कहो तब उसका गूढ़ अर्थ भक्तों को समझ आएगा।

हम ॐकार साधना कर रहे हैं लेकिन वाणी की सिद्धता हुए बिना इसका फल खुद को या औरों को प्राप्त नहीं होता। मारूति स्तोत्र का बीजतत्व 'वायु' है इसलिए इसका समावेश नित्य साधना में करने की आज्ञा चैत्र प्रतिपदा के दिन हुई। इस स्तोत्र का गूढ़ अर्थ समझ लेने से आप भक्तों के जीवन का सार्थक होगा। केवल ढोल बजाने से भगवान नहीं मिलते, भगवान से मिलने की आस लगना आवश्यक है। श्री मारूति नवनाथों के दैवत हैं। मेरे घर के पूजन में पांच पीढ़ियों से हनुमान जी की पूजा होती है और हनुमान जी की वह मूर्ति मेरी परदादी से बात करती थी। अब जिस स्तोत्र पर मेरा दृढ़ विश्वास, श्रद्धा और भक्ति है उसका गूढ़ अर्थ श्री हनुमान जी ने ही मुझसे लिखवाया है। इस विश्वास के लिए मैं उनका सदैव ऋणी हूँ। जगत् में जो कुछ कम था वह मैंने दिया है। इससे देव या ब्रह्म अलग नहीं है यह ध्यान में रखना आवश्यक है। पिछले चालीस सालों में मेरे द्वारा जो कार्य हुआ है उसके पीछे प.पू. बाबा का आशीर्वाद था और मैं अपनी वाणी द्वारा ॐकार एवं भीमरूपी स्तोत्र कहते आया हूँ इसलिए मेरे वाणी माध्यम से यह कार्य सुभलता से जगत को परिचित हुआ। इसलिए जीवन में कुछ अन्य मंत्रों का पठन नहीं किया तो चलेगा लेकिन नित्य नियम से श्री मारूति स्तोत्र कहने से उसका लाभ देहिक और आत्मिक विकास के लिए निश्चित होगा यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

।। शुभम् भवतु।।